© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 2 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

शिक्षा में कार्मिक मार्गदर्शन और परामर्श

डॉ मालती वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, ए.एन.डी. नगर निगम महिला महाविद्यालय,
कानपुर,उत्तर प्रदेश।

भारतीय राजनीतिक चिन्तन के इतिहास में कौटिल्य एक ऐसा नाम है, जिसके व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों में विलक्षणता है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र कई सन्दर्भों में दुरूह हो हुए भी अर्थव्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, प्रशासन और राजनीति पर लिखी गई एक उत्कृष्ट कृति है। इसे राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं विधिशास्त्र का विश्वकोष भी कहा जा सकता है। कौटिलय के बिना भारतीय राजनीतिक चिन्तन के इतिहास का अध्ययन अपूर्ण एवं अधूरा समझा जायेगा। यही कारण है कि भारत के लगभग सभी विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में कौटिल्य के राजनीतिक व सामाजिक विचारों को स्थान दिया गया है।

कौटिल्य का नामकरण, जन्मतिथि और जन्मस्थान तीनों ही विवाद के विषय रहे हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के प्रथम अनुवादक पं0 शामाशास्त्री ने कौटिल्य नाम का प्रयोग किया है। कौटिल्य नाम की प्रामाणिकता को सिद्ध करने के लिए पं0 शामाशास्त्री ने विष्णु पुराण में कहा है–

तान्नदान् कौटल्यो ब्राह्मणस्समुद्धरष्यिति।

कौटिल्य की कृतियों के सम्बन्ध में भी कई विद्वानों में काफी मतभेद पाया जाता है। कौटिल्य की सबसे महत्त्वपूर्ण कृति 'अर्थशास्त्र' की चर्चा सर्वत्र मिलती किन्तु अन्य रचनाओं के सम्बन्ध में कोई विशेष उल्लेख नहीं मिलता। यद्यपि 'धातुकौटिल्या', 'राजनीति' नामक रचनाओं के साथ कौटिल्य का नाम जोड़ा गया है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र भी राजशास्त्र के रूप में लिया गया होगा क्योंकि कौटिल्य ने कहा है–

मनुष्याणां वृत्तिरर्थः।

अर्थात् मनुष्यों की जीविका को अर्थ कहते हैं। पुनः अर्थशास्त्र की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा है कि–

तस्या पृथिव्या लाभपालनोपायः शास्त्रमर्थशास्त्रमिति।

अर्थात् मनुष्यों से युक्त भूमि को प्राप्त करने और उसकी रक्षा करने वाले उपायों का निरूपण करने वाला शास्त्र अर्थशास्त्र कहलाता है। इस प्रकार यह भी स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत राजव्यवस्था और अर्थव्यवस्था दोनों से सम्बन्धित सिद्धान्तों का समावेश है। वस्तुतः कौटिल्य अर्थशास्त्र को केवल राजव्यवस्था और अर्थव्यवस्था का शास्त्र कहना उपयुक्त नहीं होगा। वास्तव में यह अर्थव्यवस्था, राजव्यवस्था, विधि व्यवस्था, समाज व्यवस्था और धर्म व्यवस्था से सम्बन्धित शास्त्र है।

चाणक्य विरचित अर्थशास्त्र संस्कृत में राजनीति विषय पर एक विलक्षण ग्रन्थ है। आचार्य कौटिल्य का महाव्यक्तित्त्व एक पारंगत राजनीतिज्ञ के रूप में मौर्य साम्राज्य के विपुल यश के साथ एकप्राण होकर, एक ओर तो भारत के राजनीतिक इतिहास में अपनी कीर्ति कथा को अमर बनाए रखा दूसरी ओर अपनी अतुलनीय, अद्भुत कृति के कारण संस्कृत साहित्य के इतिहास में अपने विषय का एकमात्र विद्वान होने का गौरव उन्हें प्राप्त है। इन आधारभूत खूबियों के कारण ही आचार्य कौटिल्य के नाम–महात्म्य की कथाएं पुराणों से लेकर काव्य नाटक और कोष–ग्रन्थों में सर्वत्र परिव्याप्त हैं।

चाणक्य का जन्म ईसा पूर्व 375–251 पंजाब प्रान्त में अनुमानित है। ये पाटलिपुत्र निवासी थे। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था का विशद एवं अतुलनीय वर्णन प्रस्तुत करने वाली अमर ग्रन्थ अर्थशास्त्र के प्रणेता आचार्य निःसन्देह रूप से चाणक्य थे। चाणक्य के शिष्य कामंदक ने अपने 'नीतिसार' नामक ग्रन्थ में लिखा है कि विष्णुगुप्त चाणक्य ने अपने बुद्धि बल से अर्थशास्त्र रूपी महोदधि से मथकर नीतिशास्त्र रूपी अमृत निकाला। यह ग्रन्थ केवल राजनीति ही नहीं अपितु अर्थनीति, कृषि, समाजनीति जैसे प्रमुख विषयों पर उत्कृष्ट एवं सर्वसम्मत नीति सिद्धान्त प्रस्तुत करता है।[1]

आचार्य चाणक्य ने अपने ग्रन्थ अर्थशास्त्र में राज्य की राजनीतिक नीतिक पर विस्तार से चर्चा को तो उनके अर्थशास्त्र ने समाज की, सामाजिक नीति पर भी अपने अद्भुत विचार व्यक्त किए। मानव व्यवहार पर उनके विचार इतने स्पष्ट एवं सटीट थे कि उनमें देशकाल मात्र की त्रुटि न व्याप्त होते हुए वे वर्तमान मानव विज्ञान के लिए अतिप्रासंगिक है। यदि वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उनके विचारों को तार्किकता से प्रस्तुत किया जाए तो भी उनके कुछ विचारों को छोड़कर (जो परिस्थिति एवं देशकाल से प्रभावित थे) वर्तमान समाज के मूल्यों की कसौटी पर खरे उतरे हैं। यह मुख्यतः सूत्र शैली में लिखा हुआ है और संस्कृत के सूत्र साहित्य के काल और परम्परा में रखा जा सकता है। यह शास्त्र विस्तार से रहित, समझने और ग्रहण में सरल कौटिल्य द्वारा उन शब्दों में रचा गया जिनका अर्थ सुनिश्चित हो चुका है।[2] समाज नीति सम्बन्धी निम्नलिखित कुछ विचार इस तथ्य को पूर्णतया सिद्ध करते हैं।

वर्ण व्यवस्था

प्राचीन ग्रन्थों का अनुशीलन करने पर हमें तत्कालिक जन समुदाय तीन प्रमुख वणों में विभक्त दिखाई पड़ता है क्षत्र, ब्राह्मन्, विश।[3] जनसमूह का यह त्रिविध वर्ग भेद जब तक श्रम विभाजन की दृष्टि से ईमानदार बना रहा तब तक तो मानव एवं समाज दोनों ने अच्छी उन्नति की किन्तु जब वह अधिकार लिप्सु तथा शोषक बनकर शेष समाज की उपेक्षा करने लगा तो स्वभावतः मानव ने अपने ही समाज के पतन की भूमिका तैयार कर ली। वही कौटिल्य ने वर्णाश्रम व्यवस्था से मर्यादित समाज को सुखकर और मुक्तिदायी बताया। यह मर्यादित वर्णव्यवस्था अपने–अपने धर्म में बतायी गयी है।

वर्णव्यवस्था का उद्देश्य व्यक्ति को सामाजिक हित चेतना की ओर ले जाता है, जबकि आश्रम व्यवस्था उसको व्यक्तिगत उन्नयन की ओर आकर्षित करती है, जिससे कि तप एवं त्याग द्वारा वह कलुषों को नष्ट कर स्वयं को इस योग्य बनाता है जिससे वह समाज के अभ्युदय में उपयोगी सिद्ध हो।

वर्णाश्रम व्यवस्था की इसी मर्यादा को कौटिल्य ने अपनाया है और इसी कल्याणमय स्वरूप को उन्होंने रखा है।

विवाह व्यवस्था

चाणक्य ने अर्थशास्त्र के अधिकरण तृतीय में विवाह सम्बन्धों एवं विवाह के प्रकारों की विस्तार से चर्चा की है। विवाह के पूर्व के व्यवहार से लेकर सुखमय दाम्पत्य निर्वाह की उत्तम चर्चा प्रस्तुत की है। चाणक्य ने भी प्राचीन ग्रन्थों में उल्लिखित विवाह के आठ प्रकार को स्वीकार किया है–धर्म विवाह, ब्राह्म विवाह, प्रजापत्य विवाह, आर्ष विवाह, दैव विवाह, गान्धर्व विवाह, असुर विवाह, राक्षस विवाह। प्रथम पांच प्रकार को चाणक्य ने सर्वमान्य एवं आदर्श विवाह की संज्ञा दी है।[4]

विवाह व्यवस्था एवं विवाह सम्बन्ध के विषय वर्णन को चाणक्य ने अत्यन्त सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया। उन्होंने स्त्री एवं पुरुष दोनों के संसर्ग एवं दोनों के निजी हितों को ध्यान में रखकर एवं उनके सम्बन्धों के लघु से लघु तथ्यों को स्पष्ट कर अत्यन्त महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए हैं।

दाय भाग–उत्तराधिकार के सामान्य नियम

चाणक्य ने राजनीति से लेकर राज्यतंत्र की सबसे छोटी इकाई परिवार के समस्त नीतियों एवं उसके सुदृढ़ निर्वाह के नियम प्रस्तुत किए।

उत्तराधिकार किसी भी राज्य एवं परिवार का महत्वपूर्ण निर्णय होता है। अतः चाणक्य ने अपने कौशल की लेखनी से इस पक्ष को स्पष्ट रूप से प्रकाशित किया। उचित उत्तराधिकारी कौन हो, किन परिस्थितियों में कैसा निर्णय हो, बहुपुत्रों में उत्तराधिकार किसे दिया जाए जैसे अनेक लघु किन्तु महत्वपूर्ण तथ्यों पर चाणक्य ने अपने बहुमूल्य विचार प्रस्तुत किए।

वास्तुशास्त्र–गृह निर्माण का महत्वपूर्ण आधार

किसी भी राज्य का महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ राज्य की उत्तम भौगोलिक स्थिति, संसाधनों का उत्तम प्रकार से प्रयोग, दुर्ग एवं रास्तों का उत्तम प्रबन्ध एवं इत्यादि होता है। उसी प्रकार परिवार का महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ सुनियोजित प्रकार से गृह निर्माण कार्य होता है। आचार्य चाणक्य ने इस सम्बन्ध में चर्चा करते हुए गृह निर्माण में महत्वपूर्ण वास्तुकला सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किए।[5] जो धार्मिक एवं वैज्ञानिक दोनों ही आधार पर अद्भुत सम्मिश्रण था।

व्यापार

किसी भी राज्य के समाज के विकास में वहाँ की व्यापार व्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर आचार्य चाणक्य ने महत्वपूर्ण एवं लाभदायक वाणिज्यिक नीतियों का विवरण प्रस्तुत किया है।[6]

क्रय–विक्रय से लेकर ऋण लेने देने एवं अन्य लघु परन्तु महत्वपूर्ण तथ्यों का समावेश अपने ग्रन्थ में प्रस्तुत किया है।[7]

स्त्री समुदाय व उनके अधिकार

समाज में स्त्रियों के स्थान पर उनकी भूमिका एवं उनके अधिकारों की चाणक्य ने विस्तार से चर्चा की है। चाणक्य ने स्त्री व्यवहार की उत्तम चर्चा की है। चाणक्य का कथन था कि–किसी भी राष्ट्र की उन्नति के लिए पुरुष वर्ग के साथ–साथ स्त्रियों की भी उन्नति एवं उनकी भूमिका को सुनिश्चित करना आवश्यक है।

चाणक्य स्त्री व पुरुष के समान अधिकारों के पक्षधर थे उनके इन्हीं अद्भुत विचारों के कारण मौर्य साम्राज्य को स्वर्णयुग के रूप में याद किया जाता है।[8]

नागरिक के कार्य

राज्य या समाज की उन्नति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व उस राज्य या समाज के नागरिक होते हैं। यह तभी सम्भव है जब नागरिक अपने कार्य एवं दायित्वों का निर्वाह उचित ढंग से करें। इस तथ्य की महत्वपूर्ण आवश्यकता को समझते हुए आचार्य चाणक्य ने नागरिक के कार्यों का दायित्वपूर्ण वर्णन किया है–

अग्निप्रतीकारं च ग्रीष्में
मध्यमयोर हन्नश्चचतुर्भागयोः।
अष्टभागोऽनिदण्डः। बहिरधिश्रयणं वा कुर्यः।[9]

विद्यार्थी एवं शिक्षा

आचार्य चाणक्य के काल में शिक्षा अपनी प्रगति पर थी, जिसका प्रभाव उनके ग्रन्थ अर्थशास्त्र में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।[10]

आचार्य चाणक्य स्वयं ही तक्षशिला[11] के मेधावी छात्र एवं स्नातक के पश्चात् ही निर्विवाद प्रधानाध्यापक हुए।[12] चाणक्य ने ऐसी शिक्षा पर बल दिया जो शिक्षार्थी के बुद्धि कौशल का उत्तम निर्माण करते हुए, राष्ट्र की प्रगति में सहायक एवं स्वयं के जीविकोपार्जन से जोड़ सके।

सन्दर्भ–सूची

1. कौटिलीय अर्थशास्त्र, पंचटीका सहित, संपादक–आचार्य विश्वनाथशास्त्रिदातार, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, 1991
2. कौटिलीय अर्थशास्त्र, व्याख्याकार–वाचस्पति गैरोला, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 2006
3. Economics in Kautilya, Benay Chandra Sen, Sanskrit College, Calcuta, 1967.

4. The Arthashastra, L.N. Rangrajan, Penguin Publisher 1st Edition, 1992.
5. कौटिल्य का अर्थशास्त्र : एक ऐतिहासिक अध्ययन–डा0 ओमप्रकाश प्रसाद, राजकमल प्रकाशन, प्रथम प्रकाशन, 2014
6. The Kautilya Arthshastra (in three volume) R.P. Kangle. M.L.B.D, Delhi, 1967.
7. वैदिक अर्थव्यवस्था–डॉ0 महावीर, समानान्तर प्रकाशन, 7/7, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2001
8. The Wealth of Nation, Adam, London J.M. Dent & Sons Ltd. 1st Edt. 1776.
9. Studies in Kautilya, M.V. Krishna Rao, Mysore, 1953.
10. Index Veborum to the Kautilya Arthsshstra, R. Shamshastry, Parts 13, Mysore, 1923.
11. अर्थव्यवस्था–एक दृष्टि, नई दिल्ली।
12. Economic and Kautilya Weekly Monthly, New Delhi.